महाभारत काल में टेलीविजन होता तो क्या होता? संजय उसकी 'रनिंग कमेंट्री' राष्ट्रीय चैनल पर सुनाते और परदेसी चैनल युद्ध की कूटनीतिक तिकड़मों की खोजी रपट प्रस्तुत करते। कौरव-पांडवों के बयान जारी किये जाते और युद्ध-आयुक्त शेषनाग सब पर नजर रखते। इस अंक से प्रस्तुत है सुपरिचित वैज्ञानिक की यह काल्पनिक कथा

महाभारतीय दूरदर्शन

प्रथम भाग

दूरदर्शन पर महाभारत की मालिका बहुत लोकप्रिय साबित हुई। लेकिन यहां आप पढ़ेंगे आंखों देखा हाल, जो द्वापर युग में महाभारत युद्ध के दौरान तत्कालीन अखबारों एवं दूरदर्शन जैसे समाचार माध्यमों ने प्रसारित किया था। व्यासजी के अठारह पुराणों में जो रोचक किस्सा पढ़ने को मिलता है, उसके माहौल को अधिक स्पष्ट बनाने में इन समाचारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारी पौराणिक संस्कृति में आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी विकसित थे। ऐसा विश्वास रखने वाले निश्चित रूप से इस वृतांत को रोचक एवं बोधक पाएंगे।

० ० ०

द्वापरकालीन भारत में हस्तिनापुर नरेश धृतराष्ट्र के जमाने में राष्ट्रीय दूरचित्रवाणी का नेटवर्क आसेतु हिमाचल और मलय से गांधार तक फैला था। उसे 'दूरदर्शन' कहते थे। पहले जो इसकी एक ही वाहिनी हुआ करती थी, जिसे 'दूरदर्शन प्रथमा' या संक्षेप में 'दू-द-१' कहा करते थे। इसके कार्यक्रम राष्ट्रव्यापी तौर पर प्रसारित होते थे।

लेकिन बाद में युवराज दुर्योधन के प्रयासों की बदौलत दूरदर्शन की दूसरी वाहिनी 'दूरदर्शन द्वितीया' (दू.द.-२) खुली है। लेकिन यह कुछ चुनी हुई प्रांतीय राजधानियों में ही देखी जा सकती थी इसलिए इसे सामान्य रूप से 'राजधानी वाहिनी' कहा करते थे।

राजधानी वाहिनी पहले पहल तो केवल हस्तिनापुर एवं अंग और गांधार देशों की राजधानियों में ही दिखाने का निर्णय लिया था। यह निर्णय राजनीतिक और व्यक्तिगत स्वार्थ से लिया गया ऐसा इल्जाम पांडवों ने लगाया था। उनका कहना था कि युवराज के मामा शकुनि गांधार नरेश होने की बदौलत और अंगराज कर्ण युवराज के निकटवर्तियों में से होने के कारण गांधार और अंग राज्यों की सुविधा प्रदान की गई। इस आरोप को ठुकराते हुए हस्तिनापुर नरेश के सूचना और प्रसारण विभाग के प्रवक्ता ने टिप्पणी की कि गांधार सीमावर्ती प्रांत होने के नाते और उस दिशा से यवनों का आक्रमण होने के नाते ही आशंका होने से उस प्रांत को चुना गया। उसी प्रकार निम्नवर्णियों को सहूलियत देने के उद्देश्य से अंगराज के प्रांत को यह सुविधा प्रदान की गई। यहां कोई राजनीतिक या अंदरूनी हेतुओं का सवाल ही नहीं पैदा होता।

दूरदर्शन पर क्या-क्या प्रसारित किया जा सकता है और क्या नहीं, इसके भी अलिखित नियम थे। उदाहरण स्वरूप प्रतिदिन प्रत्येक वार्ता-पत्र में चाहे वह संस्कृत में हो या प्राकृत वा अपभ्रंश में- धृतराष्ट्र महाराज को कम से कम एक-एक बार, युवराज दुर्योधन को तीन बार, दुःशासन-कर्ण-शकुनि में से कम से कम एक को दिखाया जाना अनिवार्य था। हफ्ते में एक ही दफे पांडवों का समाचार दिया जा सकता था। जब अर्जुन ने स्वयंवर में सफलता हासिल कर द्रौपदी को जीता, तब उस वार्ता को दुबारा

दिखाने के लिए दूरदर्शन निदेशक को हस्तिनापुर से अरुणाचल को बदली की गई थी।

कुछ काल तक जनता ने इस एक तरफा प्रसारण पर अपना विरोध दर्शाया। हस्तिनापुर की राजसभा में पांडवों ने यह प्रश्न कई बार प्रस्तुत किया और काफी हंगामा भी मचाया। दूरदर्शन को स्वायत्तता देनी चाहिए। इस मुद्दे पर राजसभा में काफी चर्चा हुई। पर कौरव शासन ने इस बारे में कोई ठोस कदम नहीं उठाए। 'सत्ताधीश होने पर हम दूरदर्शन को, पूरी तरह से स्वायत्त बनाएंगे' ऐसा ऐलान युधिष्ठिर ने राजसभा में किया। उस पर शकुनि ने टिप्पणी की ऐसा तो यावच्चंद्र दिवाकरौ- नहीं होगा।'

जयंत नार्लीकर

० ० ०

पर अब जनता का विरोध कुछ कम होने लगा। क्योंकि उदारीनीति के नए माहौल में कुछ बाहरी वाहिनियों के प्रसारण के लिए मान्यता प्रदान की गई। और जनता के दिल बहलाव के लिए नारदवाहिनी, गंधर्ववाहिनी, यक्षवाहिनी आदि कई दूरचित्रवाहिनी भारत भर अपना प्रसारण करने लगीं। हां इसके लिए अंतरिक्ष से संदेश वहन करने वाली तश्तरियों की जरूरत थी, जिसके महंगे मूल्य केवल धनिक ही चुका पाते थे। जनसामान्य के लिए ऐसी तश्तरियां बहुत कम संख्या में उपलब्ध थीं। फिर भी, अब दूरदर्शन समाचार के लिए इन वाहिनियों के समाचार प्रतिद्वंद्वी के रूप में सामने आ गए।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

महाभारतीय....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इन सबमें नारदवाहिनी के समाचार सत्यनिष्ठ माने जाते थे। क्योंकि स्वयं देवर्षि नारद त्रिलोक में चक्कर लगाकर ताजे समाचार लाने में बेजोड़ थे। हर घटिका नारदवाहिनी अपने समाचार प्रसारित करती थी। त्रिलोक में कहीं भी जाकर लड़ाई के समाचार, किसी ऋषि के तपोभंग (इंद्र भगवान द्वारा भेजी गई अप्सरा द्वारा) का समाचार, किसी राजकुमारी के स्वयंवर या अपहरण के समाचार, कुबेर के खजाने में मुद्रा की स्थिति, आदि सभी घटनाओं की सही मीमांसा नारदवाहिनी में ही मिलती है, यह आम जनता की धारणा थी।

जब यादवराज श्रीकृष्ण ने विदुर के घर जाकर सूखी रोटियां खाईं तब दूरदर्शन ने उस घटना का जिक्र तक नहीं किया। लेकिन नारदवाहिनी ने उस घटना को अपने समाचारों में प्रमुख स्थान दिया और उसकी राजनीतिक पार्श्वभूमि की चर्चा की। जब इसकी जानकारी दुर्योधन को मिली, तो उन्होंने गुस्से में आकर दूरदर्शन के वार्ता-संपादक को निलंबित कर दिया।

अन्य वाहिनियां मनोरंज को ही महत्व देती थीं। उनके कार्यक्रम देव, गंधर्व, यक्ष, अप्सराओं की विलासिता के चित्रण पर जोर देते थे। ऐसे विलासी जीवन पर आधारित किस्से 'अमरावती', 'अलकापुरी' जैसी चित्रमालिकाओं में महिनों चला करते थे। विलासिता, अश्लीलता एवं अभद्र या हिंसाचारी दृश्यों के कारण ये मालिकाएं किशोरों या जवानों के लिए अयोग्य हैं, सांस्कृतिक मूल्यों का नाश करती हैं, ऐसी टीका टिप्पणी बड़े बूढ़ों द्वारा की जाती थी। जानकार लोग कहते थे कि यह कलियुग के आगमन की अग्रिम सूचना है- भरतखंड का माहौल बिगड़ता जा रहा है...

० ० ०

पांडवों ने एक खास वार्ता गोष्ठी बुलाकर ऐलान किया ''हम शांति से रहना चाहते हैं। यदि हमें केवल पांच ग्राम दिए जाएं तो हम भारतवर्ष के बाकी भूभाग पर कोई हक नहीं मांगेंगे।''

राजनीति के भाष्यकारों ने टिप्पणी की कि पांडवों की यह मांग योग्य है। वे साम्राज्य का आधा हिस्सा मांग सकते थे... लेकिन इतनी अल्प मांग पर यदि वे संतुष्ट हैं, तो कौरवों को इसकी आपूर्ति करनी चाहिए। अन्यथा महायुद्ध अटल है और ऐसे युद्ध में अपार खूनखराबा होगा।

पर दुर्योधन के सलाहकारों ने विरोध प्रकट किया। ''ऐसी ही मांग की पूर्ति से राष्ट्र की अखंडता खंडित होगी।'' उनकी इस सलाह को दूरदर्शन ने बार-बार दुहराया।

आखिर पांडवों की ओर से दूत बनकर श्रीकृष्ण भगवान हस्तिनापुर के राजदरबार में हाजिर हुए। उस चर्चा का ब्यौरा दूरदर्शन ने एवं नारद वाहिनी ने इन शब्दों में दियाः

दूरदर्शनः ''यह कौरव-पांडवों का आपसी मामला है। इसमें यादवों जैसी किसी बाहरी शक्ति का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।'' ऐसे स्पष्ट शब्दों में युवराज दुर्योधन के ताड़ना देने के बाद श्रीकृष्ण जी को खाली हाथ लौटना पड़ा। उन्होंने इस घटना पर टिप्पणी करने से इनकार किया।

नारदवाहिनीः पांडवों के दूत की हैसियत से आए श्रीकृष्ण जी को हस्तिनापुर राजसभा में धमकाने की कोशिश हुई। दूत के साथ किए गए असभ्य व्यवहार पर क्षोभ व्यक्त करते श्रीकृष्ण जी विराट रूप धारण किया, जिससे सभी कौरव भयभीत हो गए। आखिर मुख्य मुद्दे पर चर्चा शुरू हुई। लेकिन सूर्यास्त तक असफल स्थिति में समाप्त हुई। ऐसा कहा जाता है कि माहौल बिगड़ने का कारण था, युवराज दुर्योधन की स्पष्टोक्ति ''भले ही युद्ध हो पर मैं सुई की नोक पर सके, इतनी भूमि भी नहीं दे सकता।''

नारदवाहिनी के इस समाचार से काफी हंगामा हुआ। प्रमुख कौरवों ने अफवाहों और भड़काने वाले तथाकथित समाचार-पत्रों को प्रसारित करने के लिए नारदवाहिनी पर गुस्सा उतारा। खुद युवराज दुर्योधन ने इस बात से इन्कार किया कि ऐसा कोई वक्तव्य उन्होंने किया। 'युधिष्ठिर जी से आमने-सामने चर्चा के लिए कौरवों के दरवाजे हमेशा खुले रहेंगे।' ऐसा एक विज्ञप्ति में उन्होंने ऐलान किया। साथ ही में युवा कौरव गुट ने नारद वाहिनी से क्षमा-याचना की मांग की।

इस पर नारदवाहिनी के संवाददाता ने बयान जाहिर किया, 'राजसभा में घटी घटनाओं की समूची चित्रफीत मेरे पास है। आवश्यक हो तो यह दिखाई जा सकती है, जिससे साबित होगा कि दुर्योधन जी ने ऐसा ही कहा था।

अपनी दैनिक वार्तासभा में कौरव प्रवक्ता जयद्रथ ने इस बयान को धुड़काते हुए कहा कि हम नकली ध्वनि फीतों पर टिप्पणी नहीं करना चाहते। (क्रमशः)

(नवभारत टाइम्स)

भाग २

धारावाहिक

महाभारतीय दूरदर्शन

पिछली बार आपने पढ़ा- पांडवों के बीच तनातनी बढ़ती जा रही थी। इधर भारत वर्ष में सरकारी दृश्य-श्रव्य माध्यम 'राजधानी वाहिनी' के अलावा 'नारदवाहिनी, इंद्रवाहिनी, गंधर्ववाहिनी आदि कई परेदसी दृश्य-श्रव्य माध्यम आ जुटे थे। अंततः युद्ध की घोषणा हुई। शेषनाग जी मुख्य युद्ध अधिकारी नियुक्त किए गए। अब आगे:-

आखिर युद्ध अटल है, यह जाहिर हुआ। पर सभी चाहते थे कि यह एक धर्मयुद्ध के नियमों के अनुसार लड़ा जाए। धर्मयुद्ध के नियम और आचारसंहिता स्पष्ट करने के लिए तथा उनका अनिवार्य पालन हो, इसके लिए धृतराष्ट्र महाराज ने 'युद्ध-आयुक्त' के पद की घोषणा की। सभी चाहते थे कि इस पद पर ऐसा व्यक्ति हो, जो न तो सरकार का, न पांडवों का पक्षपात करे। सर्वसम्मति से धृतराष्ट्र के आव्हान पर भगवान विष्णु ने शेषनाग को अभिनियुक्त कर इस पद के लिए हस्तिनापुर भेजा।

पदभार संभालते ही शेषनाग ने कड़े नियम जाहिर किए और ऐलान किया कि इन नियमों का बिना रियायत सभी को पालन करना होगा। युद्ध में हिस्सा लेने वाले प्रत्येक योद्धा को इसके लिए अपना सचिव परिचय-पत्र बनाना होगा। हाथी, घोड़े भी इस नियम से नहीं बचेंगे। रथों का नंबर दर्ज करना होगा। ऐसे आदेशों का पालन भी तेजी से होने लगा। परिचय-पत्र बनाने का काम धूम-धड़ाके से चालू हुआ। क्योंकि परिचय-पत्र पेश किए बिना किसी को युद्ध में प्रवेश नहीं मिल सकता था।

पर शेषनाग की इस नियम की पूर्ति के बारे में निराशा हुई। परिचय-पत्र बनाने की तिथि बढ़ाने पर भी किसी प्रांत ने अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह नहीं निबाही। अधिक से अधिक अस्सी प्रतिशत नतीजा हस्तिनापुर का था, जबकि मगध राज्य ने साफ़-साफ घोषित किया कि नियोजित या बढ़ाए गए समय में भी वह परिचय-पत्र नहीं दे पाएगा। आखिर कौरव-पांडव दोनों के दबाव के फलस्वरूप महाराज धृतराष्ट्र ने शेषनागजी से कहा कि वह परिचय-पत्र की अनिवार्यता का नियम शिथिल करें।

अपनी इच्छा के बावजूद शेषनागजी

जयंत नार्लीकर

को यह सलाह माननी पड़ी। पर इस शिथिलता की तगड़ी कीमत आगे चलकर कौरवों को ही भुगतनी पड़ी.... लेकिन यह किस्सा आगे चलकर...

शेषनागजी के नियमों के अनुसार युद्ध के आरंभ दिवस के दो दिन पहले युद्ध प्रचार बंद होना था। तब तक कौरवों और पांडवों ने देशव्यापी दौरे के विभिन्न राज्यों से सेनाएं जमा कीं। कौरवों के ग्यारह तो पांडवों के सात अक्षौहिणी सैन्य कुरुक्षेत्र के मैदान में एक दूसरे से लोहा लेने वाले थे। कौरवों का प्रचारतंत्र अधिक कामयाब साबित हुआ... इस प्रचार-तंत्र के दो उदाहरण दे सकते हैं, मद्रराज शल्य का तो दूसरा द्वारकाधीश यादवों का है।

यादवों का किस्सा दूरदर्शन ने अपने प्रातःकालीन वार्ता-पत्र में इन शब्दों में सुनाया : 'पूरे यादव कुल ने अपने नेता श्री कृष्णजी के आदेश को नामंजूर कर कौरवों की ओर से लड़ने का निर्णय लिया है। भोज, अंधक, गद, बभ्रु आदि यादव वीरों का युवराज दुर्योधन ने सहर्ष स्वागत किया। यादवों के प्रवक्ता कृतवर्मा ने इस अवसर पर कहा कि यद्यपि वे और उनके सहयोगी श्रीकृष्णजी के प्रति आदर रखते हैं, फिर भी कौरवों का पक्ष सत्य एवं न्याय के लिए लड़ रहा है, इसलिए उन्हें शामिल होने का निर्णय लिया गया है। इस निर्णय

(शेष पृष्ठ ३ पर)

महाभारतीय...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

से श्रीकृष्णजी विचलित हुए हैं और उन्होंने आगामी युद्ध में सक्रिय भाग लेने से इंकार किया है। खबर है कि पांडव-अर्जुन के मनाने पर उन्होंने अर्जुन के सारथी मात्र बनने को स्वीकृति प्रदान की है।

'इंद्रप्रस्थ जलद वार्ता' नामक कौरव विरोध समाचार-पत्र ने इस बारे में एक नया पहलू सामने रखा। 'अपने अधिकार की बदौलत कौरवों ने साहूकार श्रेष्ठियों से युद्ध के खर्च के लिए जबर्दस्ती चंदा वसूली जारी की है। जो वणिक ऐसा चंदा नहीं देते, उनके घरों और दुकानों पर सरकारी कर-अधिकारियों के छापे पड़ते हैं। यादव लोग कौरवों के पक्ष में क्यों गए, इसका गुप्त कारण हमें ज्ञात है। हर यादव सामंत को इस कार्य के लिए एक लक्ष सुवर्ण मुद्राओं की थैली दी गई।'

इस समाचार से काफी खलबली मची। पांडवों ने शेषनागजी के कार्यालय में याचिका दाखिल कर इस आचारसंहिता के भंग की जांच करने पर जोर दिया। और यादवों को युद्ध में भाग लेने से मना करने की प्रार्थना की।

इस मुद्दे को लेकर यून्य प्रहर पर धृतराष्ट्र की राजसभा में प्रश्न उठाया गया। लेकिन जब सभापति भीष्म पितामह ने इस प्रश्न पर चर्चा करवाने की अनुमति नहीं दी, तो सभा में हंगामा शुरू हुआ। पांडव समर्थकों ने राजसिंहासन को घेर लिया और राजदंड फेंक दिया। कुछ सदस्यों ने कार्यसूची पत्र फाड़ डाले। सदन इन फटे भूर्जपत्रों से ढक सा गया। आखिर पितामह के अनुरोध पर धृतराष्ट्र महाराज ने यादव घोटाले की जांच करवाने का आश्वासन दिया और राज्यसभा उस दिन के लिए बंद कर दी।

पर एक सदस्यीय कृपाचार्य आयोग को जांच के बाद भी आचार संहिता के भंग होने के कोई सबूत नहीं मिले।

'पांडवों के मामा मद्रराज शल्य अपनी समूची सेना सहित कौरवों के पक्ष में आ गए हैं- ऐसा समाचार अभी-अभी हमारे पास आया है।' दूरदर्शन ने सायंकालीन समाचार में ऐलान किया। इस घटना से कौरवों का उत्साह बहुत बढ़ गया है और पांडवों के गुट में निराशा दिखाई दे रही है। हमारे संवाददाता से बातचीत करते हुए धर्मराज युधिष्ठिर ने कहा कि आज के माहौल में सुहृदों एवं निकटवर्तियों की नियम पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता।

पर, स्वयं नकुल-सहदेव के मामा-माद्री के भाई कौरवों के पक्ष में क्यों गए, इस रहस्य को खोला नारदवाहिनी ने। दूसरे दिन प्रातःकालीन वार्ता में नारदजी ने इस पर यों टिप्पणी की, 'शल्य महाराज का इरादा युधिष्ठिर की तरफ से लड़ने का था और वे अपनी सेना के साथ पांडवों की ओर जा रहे थे। रास्ते में, जब उनकी थकी मांदी सेना विश्रामस्थल ढूंढ रही थी, युवराज दुर्योधन के सहकारियों ने उनका स्वागत किया और उन्हें खास पंचतारांकित खेमे में ले गए, जहां खुद युवराज उनसे मिलने आए और महाराज शल्य को कोई नई सुविधाएं प्रदान करने का आश्वासन दिया। इसमें दूरदर्शन की राजधानी वाहिनी का क्षेपण मद्र राजधानी में भी कराने का वादा समाविष्ट था। इस आवभगत से प्रसन्न होकर महाराज शल्य कौरवों के पक्ष में गए।

यह समाचार सुनते ही धर्मराज ने शेषनागजी के यहां आवेदन किया कि युद्ध के कुछ ही दिन पहले ऐसे प्रलोभन दिखाना आचार-संहिता के खिलाफ है। शेषनागजी ने कौरवों को 'कारण प्रस्तुत करने की' अधिसूचना भेजी। कौरवों ने युद्ध आयुक्त कार्यालय में ढेर भर भूर्जपत्र भेजकर यह जवाब दिया:

'भरतखंड के उत्तरी भाग में, आर्यावर्त में दूसरी वाहिनी दिखाई जाती है, यह दाक्षिणात्य द्रविड़ों के विरुद्ध पक्षपात है। ऐसी शिकायत कई वर्षों से रही है। यह सही होने के कारण, दूसरी वाहिनी का प्रक्षेपण दक्षिण राज्य में भी करने का निर्णय एक साल पहले ही लिया गया था। पर प्रक्षेपण यंत्र भारत में नहीं बनते, उन्हें गंधर्व लोक से आयात करना पड़ता है। पिछले शुक्ल पक्ष में यह सामाग्री भारत पहुंच चुकी थी। ऐसे मौके पर मद्रराज खुद हस्तिनापुर की सीमा पर आए थे इसलिए नई वाहिनी के आरंभ की जानकारी उन्हें वहीं दी गई।

दक्षिण भारत असंतुष्ट न रहे और देश का विभाजन न हो, इसी उद्देश्य से यह सब किया गया। साथ भेजे भूर्जपत्रों में जानकारी दर्ज है... कृपया उन्हें देखें।'

भूर्जपत्रों की जांच करने का आदेश युद्ध आयुक्त ने अपने अधिकारियों को दिया।

उनकी जांच युद्ध समाप्त होने पर भी जारी रही...

जैसे-जैसे युद्ध की नियोजित तिथि निकट आई, दूरचित्रवाणी की परदेशी वाहिनियों ने युद्ध के आंखों देखे हाल को प्रक्षेपित करने के लिए अनुमति मांगी। इंद्रवाहिनी, गंधर्ववाहिनी, यक्षवाहिनी, नारदवाहिनी आदि के आवेदन-पत्र, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के यहां आए। आवेदन-पत्र में उन्होंने पहले युद्धों के प्रसारण के अपने अनुभव दर्ज किए और विपुल धनराशि शुल्क के लिए देने के वायदे किए। इस भारतीय युद्ध को देखने, सुनने और उसके परिणामों पर टिप्पणियों के लिए भारत ही नहीं समूचे त्रिलोक में गहरी उत्सुकता थी। यक्ष, किन्नर, देव, गंधर्व, पाताल के असुर भी दूरचित्रवाणी के प्रसारण को देखना चाहते थे। इस प्रसारण में दिखाए जाने वाले विज्ञापनों से इन वाहिनियों को विपुल धनराशि अपेक्षित थी, जो शुल्क से कई गुनां अधिक थी।

लेकिन शकुनि मामा ने युवराज दुर्योधन को समयोचित सलाह दी। 'युवराज, ये सभी वाहिनियां परदेशी हैं। केवल वाणिज्य हेतु ये क्षेपण के लिए उत्सुक हैं। इन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं रहेगा, अगर इनका प्रसारण हमारे हित को संभाल कर न हो सके। यदि ये पांडवों का डंका पीटें तो उसका हमारे पक्ष के मनोधैर्य पर बुरा असर पड़ेगा। इनके बजाए हमारा अपना दूरदर्शन कहीं अधिक उपयोगी साबित होगा, क्योंकि वह पूरी तरह से अपने नियंत्रण में है। कहते तो हैं 'युद्ध कथा रम्या', लेकिन कौन सी कथा रम्य है, इसका चुनाव हमारे तुम्हारे हाथों में रहे तो....'

'बिल्कुल सही मामाजी। मैं अभी सूचना और प्रसारण को आदेश देता हूं कि सभी परदेशी निविदा अस्वीकार करें और दूरदर्शन पर यह काम सौंपें। और आपका दूरदर्शन से सीधा संपर्क क्या होता है, यह सभी जानते थे। युवराज के दफ्तर से आई दूरध्वनि पर मिलने वाले आदेशों का पालन सरकारी नौकरों का फर्ज था।'

और ऐसे ही दूरध्वनि के आदेश को सुनकर दूरदर्शन के मुख्य संचालक हड़बड़ा उठे। खेल-खेल में हुई शस्त्रास्त्र स्पर्धाओं का प्रसारण उन्होंने किया था। लेकिन ऐसी स्पर्धाएं और भारतीय महायुद्ध में जमीन आसमान का फर्क था। ऐसे प्रसारण का संचालन करने के लिए एक साहसी और अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता थी। ऐसा व्यक्ति, जो अपने निर्णय स्वयं ले सके और स्वतंत्र मत प्रदर्शन कर पाए। दूरदर्शन के अधिकारी 'हां जी हां जी करने में निपुण, पर इस जिम्मेदारी के काबिल नहीं थे।

(अगली बार : समस्या का हल निकाला श्रीकृष्ण ने। कैसे?)

महाभारतीय दूरदर्शन

कल्पना कथा -३

पिछली बार आपने पढ़ा: कौरव-पांडव युद्ध की तिथि नजदीक आते ही दूरचित्रवाणी की परदेशी वाहिनियों ने युद्ध का आंखों देखा हाल प्रक्षेपित करने की अनुमति मांगी। इस भारतीय युद्ध का परिणाम जानने की उत्सुकता भारत ही नहीं समूचे त्रिलोक में थी। शकुनि मामा ने दुर्योधन को सलाह दी कि परदेशी वाहिनियों को युद्ध प्रक्षेपण का अधिकार न दें क्योंकि उन पर कौरवों का कोई नियंत्रण नहीं होगा। इसके बजाय दूरदर्शन को प्रक्षेपण के अधिकार दिए जाएं। समस्या यह थी कि ऐसे प्रक्षेपण का संचालन करने के लिए एक साहसी और अनुभवी व्यक्ति की आवश्यकता थी जो अपने निर्णय स्वयं ले सके और स्वतंत्र मत प्रदर्शन कर पाये। अब आगे:-

इस कठिनाई का हल निकाला श्रीकृष्णजी ने। उन्होंने महाराज धृतराष्ट्र के आगे प्रस्ताव रखा कि दूरदर्शन के तात्कालिक युद्ध-वार्ता प्रसारण का निदेशन संजय को सौंपा जाए।

संजय पहले दूरदर्शन के वार्ता विभाग में अधिकारी थे। बहुत ही कार्यकुशल और अच्छे निरीक्षक, जो घटनाओं का ताजा और गहरा विवेचन पेश करते थे। लेकिन वे स्वतंत्रवृति के थे और केवल चुनी घटनाओं को ही दूरदर्शन पर पेश करते थे, जो 'समाचार मूल्य' में अग्रिम स्थान पर हों। लेकिन नौकरशाही को यह मान्य नहीं था... उसका अलिखित नियम राजकुल (कौरवों का), मंत्री एवं युवराज के निष्ठावान ऐसे लोगों पर ही दूरदर्शन वार्ता केंद्रित करना चाहता था। आखिर दखलंदाजी से उकताकर संजय ने दूरदर्शन की नौकरी से त्याग-पत्र देकर गंधर्व वाहिनी में अपने कार्यक्रम स्वतंत्र भाष्यकार की हैसियत से देना प्रारंभ किया। ये कार्यक्रम बहुत ही लोकप्रिय थे। लेकिन क्या संजय फिर दूरदर्शन पर वापिस आएंगे?

श्रीकृष्ण जी ने उन्हें मनाने की जिम्मेदारी स्वयं कर ली। उन्होंने संजय को समझाया कि यह देश का आपसी झगड़ा है। इस पर बाहरी शक्तियों द्वारा टिप्पणी होने से कहीं बेहतर है हमारे

दूरदर्शन पर ही, हमारे सर्वोत्तम वार्ता संपादक यह कर दिखाएं। खास धृतराष्ट्र महाराज अंधत्व के कारण यह चाहते हैं कि संजय उन्हें सब समाचार दें और इसे भारतीय जनता को भी सुनने-देखने का लाभ दें। संजय राजी हो गए, इस शर्त पर कि युद्ध के कौन से दृश्य दिखाए जाएं, उन पर कैसी टिप्पणी हो, इसके सब निर्णय उन्हीं के होंगे- उनमें सरकारी हस्तक्षेप नहीं होगा।

धृतराष्ट्र की ओर से श्रीकृष्ण जी ने यह हामी दी और संजय दूरदर्शन में वापिस आये और वार्ता प्रक्षेपण की तैयारियां धूमधड़ाके से आरंभ की।

पर पहिले ही दिन नौकरशाही का तमाचा संजय को लगा। वह घटना इस प्रकार रही:-

युद्ध सबेरे शुरू हुआ। दूरदर्शन के पर्दे पर संजय आये और उन्होंने अपनी खास शैली में समालोचन जारी किया। लेकिन दोपहर के बाद संजय की जगह उनके सहकारी आये। लोगों ने समझा कि संजय कुछ काल विश्राम कर रहे होंगे। पर उस दिन संजय वापिस नहीं आये। लोगों ने दूरदर्शन कार्यालय में दूरध्वनि से पूछा तो उन्हें कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। किसी ने कहा कि उनकी तबियत बिगड़ गई है, तो किसी ने बताया कि उन्हें गंधर्व नगरी से एकाएक बुलावा आया। एक दूरदर्शन प्रवक्ता ने कहा कि संजय बिना कुछ कहे गायब हैं। इस बारे में हस्तिनापुर और इंद्रप्रस्थ में तेजी से अफवाहें फैलीं।

लेकिन एक घटिका में ही नारदवाहिनी ने 'संजय का नाट्यमय त्याग-पत्र' इस शीर्षक से समाचार प्रसारित किया। वह इस प्रकार था।

जयंत नार्लीकर

''अभी मिली खबरों के अनुसार दूरदर्शन ने संजय को अनिश्चितकाल के लिए छुट्टी पर जाने को कहा है। इसका कारण कहा जाता है संजय का वह भाष्य जो उन्होंने गीता के अंतिम भाग में किया।

''जैसा कि प्रातःकालीन युद्ध वर्णन में देखा गया, युद्ध के आरंभिक क्षणों में अर्जुन किंकर्तव्य विमूढ़ हो गए थे। अहिंसा के मोह में आकर उन्होंने गांडीव उतार कर रख दिया और अपने संबंधियों और मित्रों का जो कौरवों की ओर से लड़ रहे थे, वध करने से इंकार कर दिया। 'इतनी हिंसा करके युद्ध जीतना और राज्य करना इससे बेहतर न लड़ना'- ऐसा कहके उन्होंने श्रीकृष्णजी से युद्ध से निवृत्त होने का निर्णय जाहिर किया। इस पर श्रीकृष्ण जी ने उन्हें समझा-बुझाकर, गीता का उपदेश देकर कर्मयोग की दीक्षा दी। सभी दर्शकों ने इसका समालोचन संजय के मुख से सुना। ''लेकिन जब अर्जुन ने ऐलान किया कि उनका मोह नष्ट हुआ और वे

(शेष पृष्ठ ३ पर)

महाभारतीय दूरदर्शन

(पृष्ठ २ का शेष)

लड़ेंगे तब संजय ने टिप्पणी की। वे बोले कि 'जिस ओर योगेश्वर कृष्ण और धनुर्धर पार्थ हैं वहीं विजयश्री जाएगी, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है'। धृतराष्ट्र महाराज सहित सभी कौरवों ने इस भाष्य पर गहरा क्षोभ व्यक्त किया। ऐसा विश्वसनीय सूत्रों ने बताया है कि युवराज के कार्यालय से दूरध्वनि द्वारा दूरदर्शन के निदेशक को आज्ञा भेजी गई कि संजय के वादग्रस्त कथन की चित्र-फीत को काट दिया जाए। लेकिन वह काटी चित्र-फीत हम यहां दिखा रहे हैं।''

यहां संजय को पर्दे पर दिखाया गया उसी चित्र-फीत पर जो सरकारी रूप से काटी गई थी, फिर नारदवाहिनी का संवाददाता पर्दे पर आया। वह संजय के घर के बाहर से बोल रहा था:-

''अभी मैंने संजयजी से बात की। जब उन्हें अनिश्चितकाल के लिए छुट्टी पर भेजा गया, तभी वे अपना त्याग-पत्र देकर अपना घर छोड़ बाहर गुप्त जगह गए। उनका कहना है कि युद्ध समालोचक का यह फर्ज है कि वह अपनी टिप्पणी में अपने विचार व्यक्त करे। क्रीड़ा समालोचन में यही परंपरा रही है।

राम-रावण युद्ध से लेकर विराट युद्ध तक समालोचक अपनी स्वायत्तता बनाए रखे हैं। इसी फर्ज को उन्होंने निभाया। यह भी उन्होंने मान्य किया कि समालोचन की भविष्यवाणी गलत भी साबित हो चुकी है। इसलिए कौरव सरकार को ऐसी तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट नहीं करनी थी।''

लेकिन यह झगड़ा बहुत काल नहीं चला। श्रीकृष्णजी की मध्यस्थता की बदौलत संजय का त्याग-पत्र स्वीकृत नहीं हुआ और उन्हें फिर वापिस बुलाया गया। दूसरे दिन से वे फिर समालोचन करने लगे।

युद्ध के आरंभ से ही कौरव-दल में 'निष्ठावानों' का एक गुट था जिसका दावा था कि उन्हें छोड़कर अन्य कौरव पांडवों के प्रति सहानुभूति रखते हैं और युवराज दुर्योधन को अपनी पूरी निष्ठा नहीं समर्पित करते। इन निष्ठावानों के अग्रणी थे दुःशासन, शकुनि और कर्ण। कभी प्रकट रूप से या कभी आड़ से ये निष्ठावान भीष्म, द्रोण, कृप जैसे अग्रणियों का भी वाक्ताडन करते थे। उनका कहना था कि पांडवों से ये तीनों अनुभवी महारथीगण मन लगाकर नहीं लड़ेंगे।

ऐसे ही एक विवाद में भीष्म ने कर्ण से कुछ कठोर शब्द कहे। पहले ही कर्ण इस बात पर रुष्ट थे कि ज्येष्ठता का निकष लगाकर भीष्म को कौरव सेनापति बनाया गया। कर्ण चाहते थे कि बहादुरी के बल पर एवं दुर्योधन के प्रति निष्ठा के बल पर उन्हें सेनापति पद मिलना चाहिए था। ऐसी हालत में भीष्म से डांट खाने पर कर्ण ने जाहिर किया कि जब तक भीष्म सेनापति हैं, तब तक वे नहीं लड़ेंगे।

''हस्तिनापुर-काल'', ''इंद्रप्रस्थ जलद वार्ता'', ''आर्यावर्त समाचार'' आदि अखबारों ने इस वाद-विवाद को अपने प्रथम पृष्ठ पर अग्रिम स्थान दिया। यह भी माना जाता था कि कौरव दल के दो टुकड़े हो चुके हैं। जो कर्ण के समर्थक थे उन्हें कौरव (क) तथा जो भीष्म के समर्थक रहे उन्हें कौरव (भी) कहा जाने लगा।

लेकिन दूरदर्शन ने इस विवाद की वार्ता ही नहीं दी। इसलिए जो लोग अखबारों या अन्य वाहनियों के समाचारों से दूर थे, उन्हें इस बात पर आश्चर्य नहीं रहा कि युद्ध के पहले दस दिनों में कर्ण जैसे महारथी का वर्णन क्यों नहीं आया।

(क्रमशः...)

कल्पना कथा: ४

महाभारतीय दूरदर्शन

"श्री कृष्णजी! आप अपना न लड़ने का संकल्प न तोड़ें। यह हम पांडवों की लज्जा का विषय होगा।" अर्जुन के मनाने पर श्री कृष्णजी वापिस लौटे... लेकिन उस दिन बाज़ी भीष्म की रही।

पिछली बार आपने पढ़ा: संजय त्याग-पत्र देना चाहते थे लेकिन **श्री कृष्ण के मध्यस्थता की बदौलत संजय का त्याग-पत्र स्वीकृत नहीं हुआ और फिर उन्हें वापिस बुलाया गया। दूसरे दिन से फिर वे समालोचन करने लगे। दूसरी तरफ भीष्म को कौरव सेना का सेनापति बनाया गया। कर्ण चाहते थे कि बहादुरी के बल पर उन्हें सेनापति पद मिलना चाहिए था। ऐसी हालत में भीष्म से डांट खाने पर कर्ण ने जाहिर किया कि जब तक भीष्म सेनापति हैं, तब तक वे नहीं लड़ेंगे। अब आगे:**

भीष्म पितामह 'निष्ठावान्' के विशेषण से वंचित रहने पर भी कौरव सिंहासन के प्रति पूरी निष्ठा रख के लड़ रहे थे, पर उन्हें बीच बीच में युवराज दुर्योधन के ताने सुनने पड़ते थे "पितामह! आप अर्जुन को क्यों नहीं हराते?... क्या आप सच्चे दिल से लड़ रहे हैं?" एक बार ऐसे तानों से तंग आकर पितामह ने अपने शौर्य की हद कर दी जिसका अर्जुन कुछ भी जवाब न दे पाए। अर्जुन की निष्क्रियता देखकर आखिर उनके सारथि श्रीकृष्णजी उत्तेजित हो अपना सुदर्शन चक्र लेकर युद्ध के मैदान में उतरे।

"श्रीकृष्ण जी! **आप अपना न लड़ने का संकल्प न तोड़ें। यह हम पांडवों की लज्जा का विषय होगा।" अर्जुन के मनाने पर श्रीकृष्णजी वापिस लौटे... लेकिन उस दिन बाज़ी भीष्म की रही।**

लेकिन ऐसे बहादुर और सत्यनिष्ठ भीष्म को दस दिन में सेनापति पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा। इसका कारण था उनके इतिहास का शिखंडी घोटाला। पांडवों का समर्थन करने वाले कुछ पीत समाचार पत्रों ने इस घोटाले को इस मौके पर जनता के सामने रखा। उस समय पांडव दल और कौरव (क) के लोगों के वाग्बाणों से आहत होकर भीष्म को सेनापति पद से त्याग-पत्र देना पड़ा।

वैसे तत्कालीन समाज में घोटाले में आरोपित व्यक्ति त्याग-पत्र दे ऐसी परंपरा नहीं थी। जरासंघ, कंस, शिशुपाल आदि हजारों घोटाले पचाकर राज्य करते रहे। लेकिन आखिर उन्हें बलपूर्वक निकालना पड़ा था और पदत्याग के साथ-साथ वे जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। भीष्म की शिखंडी घोटाले में गलती अवश्य थी लेकिन उनका आचरण सदैव सज्जन का था। इसलिए उनका युद्ध से निकल जाना आवश्यक तो नहीं था फिर भी उन जैसे आत्मभिमानी के लिए पर्याप्त साबित हुआ। **इस त्याग-पत्र से पांडवों को राहत मिली क्योंकि भीष्म का मुकाबला करना उन्हें भारी पड़ रहा था।**

नारदवाहिनी ने अपनी टिप्पणी में **कहा कि शिखंडी घोटाले को इस मौके पर बाहर लाने का षड्यंत्र श्रीकृष्णजी ने रचा था।**

"भीष्म पितामह का इस्तीफा स्वीकृत होने पर महारथी कर्ण कौरव सेना में भरती", कर्ण पहले दस दिन युद्ध में सहभागी नहीं थे इस सत्य को जाहिर न करने वाले दूरदर्शन ने उनके युद्ध में शामिल होने की घटना को अपने सायंकालीन समाचारों में अग्रिम स्थान दिया। दूरदर्शन ने आगे कहा, "कर्ण जी ने सेनापति पद के लिए गुरुवर्य द्रोणाचार्य के नाम का प्रस्ताव रखा, जो कौरवों ने आम सहमति से पारित किया।"

यह 'आम सहमति' कैसे बनी, इसकी अंदरूनी बात 'हस्तिनापुर काल' में यों प्रकाशित हुई।

'महारथी कर्ण कौरव सेना में लौटे इस अपेक्षा से कि भीष्म पितामह के पश्चात् सेनापति के लिए उन्हीं को चुना जाएगा। युवराज दुर्योधन का निकटवर्ती गुट जिनमें राजकुमार दुःशासन और राजभातुल शकुनि हैं, कर्ण का नाम आगे बढ़ाने पर उतारू था। खुद दुर्योधन भी इसी विचार में थे। लेकिन कृपाचार्य और विदुर ने ज्येष्ठताक्रम को अपनाकर द्रोणाचार्य के नाम पर जोर दिया परंतु द्रोणाचार्य निष्ठावान् हैं या नहीं, इसके प्रति दुर्योधन आशंकित थे। कर्ण की निष्ठा के प्रति उन्हें तनिक भी संदेह नहीं था। इसी बात पर दुःशासन और शकुनि जोर दे रहे थे। आखिर महाराज धृतराष्ट्र ने द्रोणाचार्य के नाम की पैरवी की और युवराज को समझाया कि ज्येष्ठताक्रम का उल्लंघन सेना के मनोबल के लिए घातक सिद्ध होगा। स्वयं द्रोणाचार्य प्रकट रूप से अपने को सेनापति पद के लिए प्रत्याशी नहीं बताते थे लेकिन उनके निकटवर्ती उन्हें इस पद का इच्छुक बताते थे।

"आखिर कुछ सौदेबाजी के बाद कर्ण ने इस स्पर्धा से नाम वापिस लिया। बदले में उन्हें जरूरत पड़े तो अगले सेनापति पद देने का वादा युवराज ने किया और कर्ण के आग्रह पर स्वयं महाराज शल्य से सेनापति कर्ण के सारथी बनने का आश्वासन दिया।"

लेकिन वार्ता परिषद् में दुर्योधन शल्य-कर्ण तीनों ने ऐसे वादों को इनकार दिया। कौरव प्रवक्ता ने बताया, "कौरव सदा से संघटिक एंव एकतावादी रहे हैं। आम सहमति यह उनकी परंपरा रही है।" अपनी निष्ठा की परीक्षा देने के लिए द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की और उसमें प्रवेश कर सकने वाले एकमात्र पांडव अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की निर्घृण हत्या की। उस घटना से क्षोभित अर्जुन ने घोषणा की कि आज युद्ध के सूर्यास्त के पहले वे जयद्रथ का वध करेंगे अन्यथा आत्महदहन कर देंगे। क्योंकि एकमात्र जयद्रथ ऐसे योद्धा थे जिन्होंने अभिमन्यु के सिवा और किसी पांडव योद्धा को चक्रव्यूह में घुसने नहीं दिया था।

क्रमशः

-जयंत नार्लीकर

महाभारतीय दूरदर्शन

कल्पना कथा: ५

द्रोणाचार्य ने कुशलता से व्यूह रचना कर जयद्रथ को सुरक्षा प्रदान की। उधर सारथि कृष्ण तथा पांडवों की सहायता से अर्जुन जयद्रथ की ओर बढ़ रहे थे। इस संघर्ष का आंखों देखा हाल संजय अपनी रोचक शैली में सुना रहे थे। दूरदर्शन के दर्शकों की भीड़ बढ़ती ही जा रही थी। सूर्यास्त होने को ही था कि युद्ध का कार्यक्रम दूरदर्शन के पर्दे से गायब हो गया। सायंकालीन वार्तापत्र प्रस्तुत किया जाने लगा और घमासान युद्ध की परवाह किए बिना दूरदर्शन अपने मुख्य समाचार सुनाने लगा।

पिछली बार आपने पढ़ा : शिखंडी घोटाले के कारण कौरव सेनापति भीष्म को पद से त्यागपत्र देना पड़ा, साथ ही जीवन से भी हाथ धोना पड़ा। द्रोणाचार्य नये सेनापति बने और चक्रव्यूह की रचना कर अर्जुन पुत्र अभिमन्यु की निर्घृण हत्या की। क्षोभित अर्जुन ने सूर्यास्त से पूर्व जयद्रथ-वध करने की प्रतिज्ञा की। अब आगेः

द्रोणाचार्य ने बड़ी कुशलता से व्यूह रचना करके जयद्रथ को सुरक्षा प्रदान की थी। कौरव योद्धाओं की दीवारें जयद्रथ और अर्जुन के बीच खड़ी थीं। उधर कृष्ण के सारथ्य और पांडवों की सहायता से, अर्जुन क्रमशः जयद्रथ की ओर बढ़ रहे थे। इस संघर्ष का आंखों देखा हाल संजय अपनी रोचक शैली में दूरदर्शन पर सुना रहे थे। हस्तिनापुर और इन्द्रप्रस्थ ही नहीं गांधार से मद्र, सिंधु से ब्रम्हपुत्रा तक छोटे-बड़े ग्रामों में नागरिक काम धंधा छोड़कर दूरदर्शन के प्रसारण देख रहे थे।

परदे पर एक घटिका यंत्र बता रहा था कि सूर्यास्त के लिए कितना समय शेष है। बीच-बीच में रेखाचित्र के द्वारा अर्जुन के जयद्रथ की ओर बढ़ने का ब्योरा दिया जाता था। सबेरे से अर्जुन ने कितने कौरव सैनिक मारे, इसकी जानकारी दी जा रही थी। बड़े जोश के साथ संजय बता रहे थे... ''सबेरे अर्जुन कौरव सैनिकों का वध एक घटिका में एक सहस्त्र- याने उनके पहले के पराक्रमों को ध्यान में रखते हुए कुछ धीमी गति से कर रहे थे। हो सकता है श्रीकृष्णजी के द्वारा बनाए गए कार्यक्रम के अनुसार यह नीति अपनाई गई। पर अब उस धीमी गति की भारी कीमत अर्जुन को चुकानी पड़ रही है।''

यहां संजय ने अपने पास बैठे संख्याशास्त्री से पूछा, ''चित्रगुप्तजी आप बताइये, अर्जुन का अब तक का सर्वाधिक वधों का उच्चांक क्या रहा है?''

''संजय, जब विराट पर हमला हुआ था तब अर्जुन ने आधी घटिका में पांच सहस्त्र कौरव सेना को हताहत किया था। लेकिन, यह माहौल कुछ अलग मालूम पड़ता है। थोड़े काल के लिए भले ही संभव हो पर वधों की ऐसी तेज रफ्तार तीन चार घटिका बनाए रखना संभव नहीं'' चित्रगुप्त बोले।

यहां संजय ने हनुमानजी को पर्दे पर बुलाया। ''हनुमानजी? आपका बहुत लंबा अनुभव है... आप अर्जुन की जगह होते तो क्या करते?''

अपनी पूंछ हाथ में लेते हुए हनुमानजी बोले ''जैसे मैंने रास्ते में खड़ी सुरसा राक्षसी से लड़ाई न करके उन्हें बगल रख मैं भाग निकला, वैसे अर्जुन को करना चाहिए। अब केवल कौरव सेना का वध करके आगे निकलना मुश्किल है। लेकिन मैं आश्वस्त हूं, खुद रामचंद्रजी कृष्णावतार में अर्जुन को मार्गदर्शन कर रहे हैं...''

''हनुमानजी मौके की बात बोले'' संजय ने कहा ''अभी कुछ ऐसा ही हो रहा है। अर्जुन के सामने त्रिगर्तों की सेना आ खड़ी हुई... उनके युद्ध से लगता है उन्हें दीक्षा दी गई है कि आक्रमक युद्ध मत खेलो, केवल अर्जुन को आगे न बढ़ने दो। अब कृष्णजी क्या करेंगे?...''

''बहुत खूब! श्रीकृष्ण जी मानों हनुमानजी की बातें सुन रहे थे। उन्होंने रथ दाहिने घुमाकर तेजी से दौड़ाया और आंखों से ओझल हो गए। त्रिगर्त देखते ही रह गए।

अब कैमरे की गति धीमी कर देखें कृष्णार्जुन गए कहां...

''वो... रहे हमारे पांचवें कैमरे ने उन्हें पकड़ा। वे बगल घूमकर त्रिगर्तों का चक्कर लगाकर उनके पीछे गए। बेचारे त्रिगर्त।''

फिर संजय ने कैमरे से कौरवों की व्यूह रचना का विहंगम दृश्य दिखाते हुए टिप्पणी की: ''अब अर्जुन के आगे दो सहस्त्र कौरव वीर हैं। और बीच है केवल आधी घटिका। यदि अर्जुन इन्हें मार पाएं तो राम-रावण युद्ध में इंद्रजीत का बंदर भालू मारने का रेकार्ड टूट जाएगा।''

दूरदर्शन की पहली वाहिनी के दर्शकों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। कुछ बड़े ग्रामों में बड़े पर्दों पर वीथियों में, गांवों के प्रमुख केंद्रों में, घर-घर में लोग इकट्ठा होकर सूर्यास्त की परीक्षा में थे। कौरवों और पांडवों के समर्थकों ने विजयोत्सव मनाने के लिए पटाखों, आतिशबाजी, रोशनाई आदि का इंतजाम कर रखा था। सूर्यास्त के पश्चात् शीघ्र ही पता चलेगा किसके पटाखे बजेंगे।

वैसे वंग, मलय, कलिंग आदि राज्यों में सूर्यास्त हो चुका था। लेकिन पश्चिम में हस्तिनापुर में अभी सूर्य बिंब क्षितिज के कुछ ही ऊपर था। लोग आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे...

पर हाय राम!!!...

युद्ध का कार्यक्रम दूरदर्शन के पर्दे से गायब हो गया। संजय की उत्तेजित वाणी भी विलीन हो गई। और पर्दे पर सूचना आई: ''युद्ध का प्रक्षेपण अब दूसरी वाहिनी-राजधानी वाहिनी पर देखें। इस वाहिनी पर अब सायंकालीन वार्तापत्र प्रस्तुत है।''

आसेतु-हिमाचल, आमलय-गांधार देश के कोने-कोने से निकली दर्शकों की शापवाणि, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के स्थितप्रज्ञ हस्तिनापुर में सुन भी पाते तो कर ही क्या सकते थे? वे जानते थे कि अर्जुन-जयद्रथ संघर्ष के आखिरी निर्णायक क्षण बहुतांश दर्शक नहीं देख पाएंगे क्योंकि राजधानी वाहिनी सभी जगह नहीं जा पाती।

फिर भी कुछ दर्शकों ने दूरदर्शन की पहली वाहिनी चलाए रखी, इस आशा से कि शायद समाचार में वे युद्ध के अंतिम क्षण दिखाए जाएं। आखिर दूरदर्शन के समाचार संपादक 'युद्धस्य वार्ता रम्या' इस कथन को जानते होंगे।

लेकिन दूरदर्शन ने अपना रवैया कायम रखा- भले ही कुछ योजनों पर घमासान लड़ाई चल रही हो। उसने अपने मुख्य समाचार सुनाए:-

सांदीपनि ऋषि की राजधानी को भेंट...

महिषि गांधारी कन्याशाला के वार्षिकोत्सव में राजकुमारी दुःशलाजी का भाषण...

युद्धकाल की आपात स्थिति में रथों की मरम्मत करने वालों की हड़ताल अवैध घोषित...

कुरुक्षेत्र में घमासान युद्ध...

और ये वार्ताएं समाप्त होते-होते सूर्य कभी का अस्त हो चुका था। फिर भी अंतिम भाग को उत्कंठापूर्वक सुनने वाले दर्शकों ने खाली इतना ही सुना?

''अभी प्राप्त हुए समाचार के अनुसार अर्जुन आत्मदहन की तैयारी कर रहे हैं। कौरव दल में उत्साह का वातावरण छाया है।''

बेचारा पार्थ! कल अपना सुत गंवाया और आज अपने प्राण। अब पार्थ के बिना, अंगराज को कौन रोकेगा?... अब तो कौरव जीत ही गए।'' दूरचित्रवाणी सच बंद करते हुए राम व्यास शास्त्री बोले। काशी में अधिकांश जनता पांडवों की समर्थक थी। दशाश्वमेघ घाट पर जमी भीड़ में सन्नाटा छाया था।

इतने में उनके पड़ोसी लक्ष्मण शर्मा बड़े उत्साह से उनके घर प्रविष्ट हुए। ''रामव्यासजी- चलिये मिठाई खाने... आखिर आज एक शुभवार्ता सुनी।''...

(क्रमशः)

-जयंत नार्लीकर

कल्पना कथाः समापन किस्त

महाभारतीय दूरदर्शन

पिछली बार आपने पढ़ाः अश्वत्थामा के वध का समाचार सुन कर द्रोणाचार्य ने शस्त्र त्याग दिए और मारे गए। क्षुब्ध शेषनाग ने युद्ध आयुक्त के पद से इस्तीफा दे दिया। नए कौरव सेनापति अंग भी दो दिन के युद्ध के पश्चात् मारे गए अब आगेः

-जयंत नार्लीकर

आखिर पांडवों के सात और कौरवों के ग्यारह अक्षौहिणी सेना का पूरा विनाश होकर यह भयानक युद्ध अठारह दिनों पश्चात् समाप्त हो हुआ। महाराज धृतराष्ट्र के सौ में से निन्यानबे पुत्र अकेले भीम ने मार डाले। उनकी यह प्रतिज्ञा थी कि सभी कौरव राजकुमारों को वे अकेले खत्म करेंगे। अब बचे युवराज दुर्योधन। वे कहां गायब हो गए किसी को मालूम नहीं था।

आखिर दूरदर्शन के एक संवाददाता को दुर्योधन महाराज कहां छिपे हैं इसका पता चला। उसने शीघ्र यह वार्ता संपादक के पास पहुंचाई। आधी घटिका में दूरदर्शन के मध्यान्ह वार्तापत्र में तत्काल ही यह जानकारी जाहिर करना संभव था। जो नारद वाहिनी नहीं कर पायी उसे दूरदर्शन ने कर दिखाया, ऐसा जाहिर करने का अनोखा मौका था। वार्ता संपादक ने प्रक्षेपण के लिए यह समाचार बनायाः

''जैसा आप जानते हैं कि युवराज दुर्योधन का पता अब तक नहीं लगाया जा सका। अभी प्राप्त समाचार में हमारे संवाददाता ने बताया कि कुरूक्षेत्र के पास एक तालाब में छिपे युवराज का पता पांडवों ने लगाया। युधिष्ठिर जी ने उनसे कहा कि कोई भी शस्त्र चुन कर किसी भी एक पांडव से वे द्वंद्वयुद्ध लड़ें। युवराज चाहते तो नकुल या सहदेव को चुनकर गदा युद्ध में उनका खातमा कर सकते थे। पर स्वाभिमानी दुर्योधन ने भीम को ही चुना और उनसे गदायुद्ध किया। यद्यपि दुर्योधन गदा युद्धकला में भीम से कहीं बेहतर थे तो भी अनीति का सहारा लेकर भीम ने दुर्योधन की जांघ पर गदा का वार किया जो नियमों के विरुद्ध था। स्वयं पंच और दोनों को गदा युद्ध कला सिखाने वाले बलराम जी ने इस पर क्षोभ व्यक्त किया। पर दुर्योधन महाराज अब मृत्यु की अंतिम घड़ियां गिन रहे थे।''

संवाददाता ने गदा युद्ध की फिल्म भेजी थी, जिसे धीरे-धीरे चला कर भीम के अधर्म प्रेरित वार को अच्छी तरह दिखाया गया जा सकता था। लेकिन हाय!

इस वार्ता को जाहिर करने से वार्ता संपादक को रोका गया। उसे बताया गया कि विदुर कुरूक्षेत्र से हस्तिनापुर की ओर रवाना हो गए हैं। जब तक वे महाराज धृतराष्ट्र को यह वार्ता स्वयं नहीं सुनाते तब तक इसका प्रसारण रोका जाए। वार्ता सनसनीखेज है और आम जनता में इसके क्या प्रस्ताव होंगे, अंदाजा लगाना कठिन है। दंगे-फसाद की आशंका है।

परिणामतः मध्यान्ह एवं सायंकालीन वार्तापत्र में दूरदर्शन ने केवल इतना ही कहाः ''युवराज दुर्योधन की तलाश जारी है।''

तब तक यह वार्ता अन्य मार्गों से जाहिर हो चुकी थी। जिस संवाददाता ने युद्धवार्ता की टेप ली थी उसने वह टेप सर्वाधिक मूल्य में नारद वाहिनी को बेची और अपने शाम के समाचारों में नारदवाहिनी ने उसे अच्छी तरह दिखाया।

हस्तिनापुर में नयी सरकार आई। महाराज युधिष्ठिर ने राजगद्दी पर बैठते ही नए फर्मान जारी किए। उनमें एक था दूरदर्शन को स्वायत्त संस्थान बनाने का संकल्प। दूरदर्शन केवल सरकार का मुखपत्र न रहे- निष्पक्षपाती रहे और वास्तवता का चित्रण करे ऐसा अपना उद्देश्य उन्होंने जाहिर किया। उसी तरह नौकरशाही से उसे मुक्त करने की भी उन्होंने घोषणा की।

हस्तिनापुर में नयी सरकार आई। महाराज युधिष्ठिर ने राजगद्दी पर बैठते ही कई नए फर्मान जारी किए। उनमें एक था दूरदर्शन को स्वायत्त संस्थान बनाने का संकल्प। दूरदर्शन केवल सरकार का मुखपत्र न रहे- निष्पक्षपाती रहे और वास्तवता का चित्रण करे ऐसा अपना उद्देश्य उन्होंने जाहिर किया। उसी तरह नौकरशाही से उसे मुक्त करने की भी उन्होंने घोषणा की। ये फर्मान सुनते ही श्रीकृष्ण जी द्वारका छोड़ भागते-भागते हस्तिनापुर आ पहुंचे। साथ ही उन्होंने एक दूरपत्र (फैक्स) द्वारा युधिष्ठिर से प्रार्थना की कि उनसे चर्चा किए बिना इन फर्मानों को कार्यान्वित न करें।

ये फर्मान सुनते ही श्री कृष्णजी द्वारका छोड़ भागते-भागते हस्तिनापुर आ पहुंचे। साथ ही उन्होंने एक दूरपत्र (फैक्स) द्वारा महाराज युधिष्ठिर से प्रार्थना की कि उनसे चर्चा किए बिना इन फर्मानों को कार्यान्वित न करें।

''आओ वासुदेव! तुम्हारा स्वागत है। इतनी भागदौड़ की क्या जरूरत थी?'' मुस्कुराते हुए युधिष्ठिर ने पूछा।

''धर्मराज! युद्ध के आरंभ में मैंने अर्जुन को एक गीता सुनाई। अब युद्ध के पश्चात् लगता है तुम्हें दूसरी गीता सुनानी पड़ेगी।'' श्री कृष्ण उत्तेजित थे।

''पहेलियों में मत बोलो, अच्युत। क्या मैंने कोई गलती की है?'' धर्मराज ने सौम्यता से पूछा।

''गलती?.... सभी कुछ बिगाड़ने पर उतारू हो तुम। यह क्या माजरा है दूरदर्शन को स्वायत्त बनाने का?'' श्री कृष्ण ने पूछा।

''भाई! मैं तो युद्ध के पहले दिए गए आश्वासनों की पूर्ति कर रहा हूं। यह आश्वासन मैंने ही जनता को दिया था।'' युधिष्ठिर बोलेः ''राज्यकर्ता को चाहिए कि वह निष्पक्षपाती रहे और अपनी निंदा सुनने के काबिल हो। मर्यादा पुरुषोत्तम राम एक धोबी की निंदा पर...''

''देखो मैंने रामावतार में जो बुद्धपना दिखाया उसकी याद मत दिलाओ। ऐसी निंदा से क्या फायदा कि अपनी धर्मपत्नी गंवानी पड़े?'' कृष्ण और भी उत्तेजित होकर बोले।

''पर मुझे तो ऐसे कदम में कोई नुकसान नजर नहीं आता'' युधिष्ठिर ने दलील दी।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

महाभारतीय दूरदर्शन

(पृष्ठ दो का शेष)

"यही वाक्य कहकर तुमने जुआ खेलने का निमंत्रण स्वीकारा था, उसे याद करो धर्मराज! सुनो! दूरचित्रवाणी एक प्रभावशाली माध्यम है जिसका उपयोग राज्यकर्ता को सुविचार से करना चाहिए। उसे चाहिए कि जनता को दिखाए कि वह कितना नीति मूल्यों का उपासक, सत्यवचनी और न्यायी है।

अपने सिंहासन को टिकाने का यह एक प्रमुख हथियार है। तुम्हें ही नहीं तुम्हारे आप्तों, निकटवर्तियों की प्रतिभाओं को इस माध्यम से जनता के सामने रखने का मौका इस स्वायत्तता देने की मूर्खता से तुम गंवा रहे हो। याद रखो एक स्वायत्त दूरदर्शन दोधारी तलवार है। तुम्हें भी इसके वार झेलने पड़ेंगे..."

और जैसे कुरूक्षेत्र में अर्जुन को सुननी पड़ी वैसी ही उपदेश गीता युधिष्ठिर को हस्तिनापुर में सुनने को मिली। और श्रीकृष्ण बोलते रहे जब तक युधिष्ठिर के मुख से वही अर्जुन के वाक्य निकले "नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादात् मयाऽच्युत"।

युधिष्ठिर बोले "पर स्वायत्तता का आश्वासन तो मैं दे चुका हूं। सुझाता हूं। दूरदर्शन को स्वायत्त अपना वचन मैं लौटा नहीं सकता... आखिर मैं सत्यवचनी धर्मराज कैहलाता हूं।"

"यह कौन कहता है कि तुम अपने वचन वापस लो?" श्री कृष्ण हंसकर बोले... "मैं तुम्हें मार्ग सुझाता हूं। दूरदर्शन को स्वायत्त बनाने के प्रस्ताव को मूर्त रूप देने के लिए तुम एक समिति गठित करो। समिति का ब्यौरा आएगा। तब उस पर विचार करके निर्णय लेना।"

"पर इस समिति के सदस्य कौन होंगे?"

"यह रही मेरी सूची" श्रीकृष्ण जी पूरी तैयारी से आए थे। वे बोले, "इसमें रखो अश्वत्थामा, नारद और हनुमान जी को।"

"क्यों?" धर्मराज ने पूछा।

"क्योंकि ये तीनों अमर हैं। पता नहीं समिति की रिपोर्ट कब आए?"

श्रीकृष्ण का अंदाजा सही निकला। द्वापर युग बीता, कलियुग चल रहा है पर समिति की रिपोर्ट अभी नहीं आयी।